कक्षा- १२

विषय - हिंदी

पाठ - भक्तिन, महादेवी वर्मा

"स्मृतियों की रेखाएँ" में संकलित "भक्तिन" महादेवी वर्मा का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है। इसमें महादेवी वर्मा ने अपनी सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए उसके व्यक्तित्व का रोचक किन्तु मर्मस्पर्शी शब्द चित्रण किया है। महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य के छायावादी काल की प्रमुख कवयित्री है। उन्हें आधुनिक युग का मीरा भी कहा जाता है। महादेवी वर्मा ने संस्कृत से एम०ए० किया और तत्पश्चात प्रयाग-महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या नियुक्त की गईं। महादेवी वर्मा ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। उन्होंने न केवल साहित्य लिखा बल्कि पीड़ित बच्चों और महिलाओं की सेवा भी की।

महादेवी वर्मा की भाषा संस्कृतनिष्ठ सहज तथा चित्रात्मक है जिसमें हिन्दी के तद्भव व देशज शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। इनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाओं के नाम हैं - गिल्लू, सोना, अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, हिमालय आदि।

भक्तिन महादेवी वर्मा जी द्वारा लिखित एक संस्मरणत्मक रेखाचित्र है, जो की उन्होंने अपनी सेविका के बारे में लिखा है। भक्तिन छोटे कद व दुबले शरीर वाली वृद्ध महिला है। लेखिका ने उसकी तुलना अंजनीपुत्र हनुमान से ही है ,जो की बिना थके दिन रात काम करने वाली है। वह लेखिका के पास जब पहली बार नौकरी के लिए तो अपना नाम लक्ष्मी बताया ,लेकिन यह भी कहा कि वह नाम से न पुकारी जाय। लक्ष्मी के गले में कंठी माला देखकर लेखिका ने उसका नाम भक्तिन रख दिया ,जिसे सुनकर वह गदगद हो गयी।

महादेवी वर्मा जी ने भक्तिन के जीवन को चार भागों में बाटा है, जिसमें पहले भाग में माता -पिता व विवाह का वर्णन है। वह इलाहाबाद के झूंसी में एक सूरमा की एकलौती बेटी थी। पाँच वर्ष की आयु में उसका विवाह हंडियां ग्राम के एक संपन्न गोपालक की पुत्र वधु बानी। विमाता ने उसका गौना नौ वर्ष की आयु में करवा दिया। लक्ष्मी के पिता की मृत्यु का समाचार ,विमाता ने पहुँचने न दिया और सास भी रोने धोने के अपशकुन के डर से लक्ष्मी को नहीं बताई। तो बाद में मायके जाने पर लक्ष्मी वापस लौट आयी।वापस लौटने पर सास को खरी खोटी सुनाई। पति के ऊपर गहने फेंक -फेंक कर अपने दुःख को व्यक्त किया।

भक्तिन के जीवन का दूसरा भाग भी दुखद है। उसके एक एक के बाद एक तीन कन्याओं को जन्म दिया ,तो सास और जेठानियों ने उपेक्षा की क्यों कि दोनों जेठानियाँ ने काले - कलूटे बेटों को जन्म दिया था। उनके पुत्रों को दूध मलाई खाने को मिलती ,वहीं भक्तिन की बेटियां काला गुड़ ,मट्ठा चना ,बाजरा जैसे मोटा अनाज खाती। लक्ष्मी का पति ,उसे बहुत प्यार करता था। वाह गाय ,भैस ,खेत ,खलिहान ,फलों के पेड़ों की देखभाल

करती थी।बड़ी बेटी का विवाह पति ने धूम धाम से किया। लेकिन २९ साल की उम्र में ही दोनों बेटियों का भार डालकर पति स्वर्गवासी हो गया। किसी प्रकार भक्तिन ने दोनों बेटियों के हाथ पीले किये तथा बड़े -दामाद को घर जमाई बनाकर रखा।

भक्तिन के जीवन के तीसरे भाग में भी दुःख काम नहीं हुआ। बड़ी बेटी विधवा ह गयी। जेठ के बड़े बेटे ने अपने साले का विवाह ,अपनी बहिन से करवाना चाहा ,तो उसने नापसंद कर दिया। उस समय तो बात टल , दिन बाद भक्तिन के घर में न रहने पर वह तीतरबाज बेटी के घर में घुस गया ,जबकि उसके सर्मथक गाँव वालों को बुला लाये। पंचायत ने कलियुग का हवाला देते हुए विवाह कराने का आदेश दिया। दामाद दिन भर तीतर लड़ाता। पारिवारिक द्वेष में गाय -ढोर ,खेती बाड़ी सब झुलस गए। एक बार लगान न देने पाने के कारण जमींदार ने उसे दिन भर कड़ी धुप रखा। भक्तिन अपमान के कलंक कमाई के लिए लेखिका के घर में सेविका बन गयी।

भक्तिन के जीवन में चौथे भाग में घुटी हुई चाँद की मोती मैली धोती से धनकें हुए लेखिका के घर प्रस्तुत हुई। उसकी वेश -भूषा में वैरागी और गृहस्थ मिश्रण था। वह तड़के उठकर नहा धोकर लेखिका की धूलि हुई धोती जल के छींटें से पवित्र कर पहनने लगी।भोजन के समय वह एक थाली में मोती और चित्तीदार रोटी तथा गाधी दाल लेखिका को परोस दिया। भक्तिन बड़ी मेहनती ,ईमानदार और सच्ची स्वामिभक्त थी। लेखिका की सेवा करना उसका धर्म बन गया था। भक्तिन का स्वभाव ऐसा बन गया था कि वह दूसरों को अपने मन के अनुसार बना लेती थी ,लेकिन स्वयं परिवर्तित नहीं होती थी। यही कारण है कि वह लेखिका के उत्तर पुस्तकिआ को बाँधना ,अधूरे चित्रों को कोने में रखना ,लेखिका के लिए दही का शरबत और तुलसी की चाय बनाकर लाना ,यह बड़ी खुसी ख़ुशी करती थी।

युध्य के समय भक्तिन के बेटी दामाद जब लेने आये तो वह लेखिका को अकेले छोड़कर जाने को तैयार न हुई। उसका कहना था कि जहाँ मालिकन रहेगी ,वहां मैं रहूंगी ,चाहे वह काल कोठरी ही क्यों न हो। लेखिका के साहित्यिक मित्रों का भी भक्तिन बहुत समन्ना करती थी। लेखिका ऐसी स्वामी भक्त सेविका को खोना नहीं चाहती है।

क्तिन पात्र का मानसिक द्वन्द ,अंतर्द्वंद व पीड़ा का लेखिका महादेवी वर्मा जी ने प्रस्तुत किया है। भक्तिन संस्मरण में लेखिका ने एक ऐसी देहाती वृद्धा का चित्रण किया है ,जिसके अतीत व व्रतमान का चित्रण किया है। लेखिका ने भक्तिन की तुलना हनुमान जी से की है। भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था।पाँच वर्ष की आयु में विवाह ९ वर्ष की आयु में गौना हो गया।पिता ने मृत्यु का समाचार विमाता व सास ने नहीं पहुँचने दिया। बड़ी बेटी के विवाह के उपरान्त पति भी स्वर्ग सिधार गए। किसी प्रकार दो बेटियों के हाथ पीले किये ,लेकिन दैव कृपा से घर - जमाई बड़ा दामाद भी स्वर्ग सिधार्म गया।पारिवारिक द्वेष में जीवन झुलस गया।गाय भैस ,खेत ,खलिहान सब खतम हो गए। भक्तिन जैसी साहसी महिला जीवन में संघर्ष ही करती रहती है।वह हिम्मत नहीं हारती। वह अंत में लेखिका की सेवा में उपस्थित हुई। वह हनुमान जी की तरह

लेखिका की सेवा करती रहती है। वह हिम्मत नहीं हारती।पढ़ी लिखी न होने पर भी वह लेखिका की सहायता करती थी।लेखिका पर स्वयं भक्तिन का इतना प्रभाव पड़ा कि वह स्वयं देहातिन हो गयी। वह बेटी - दामाद के बुलावा आने पर भी लेखिका का साथ छोड़ कर जाने को तैयार न हुई।
इस प्रकार हम देखते हैं कि भक्तिन के रूप में आदर्श सेविका का रूप प्रस्तुत किया गया है। वह अपने चरित्र व स्वभाव से सभी को अपना बना लेती है।

संकल्य – निश्चय। विचित्र-आश्चर्यजनक। **जिज़ासु** – उत्सुक। **चिंतन** – विचार। **स्यदध** – मुकाबला। **अंजना** – हनुमान की माता। **दुवह** – जिसे ढोना मुश्किल हो। **कयाल** – भाग्य, माथा। **कुचित** – सिकुड़ी हुई। **शेष द्वतिवृत्त** – पूरी कथा। **अंशतः** – थोड़ा-सा।

विमाता – सौतेली माता। **किंवदंती** – जनता में प्रचलित बातें। **वय** – आयु, जवानी। **गोना** – विवाह के बाद पति का अपने ससुराल से अपनी पत्नी को पहली बार अपने घर ले आना। **अगाध** – अधिक, गहरा । **मरयातक** – जानलेवा। **नेहर** – मायका। **अप्रत्याशित** – जिसकी आशा न हो। **अनुग्रह** – कृपा। **युनरावृतियाँ** – बार-बार कहना। **ठेले ले जाना** –पहुँचाना। **लेश** – तनिक। **चिर बिछह** – स्थायी वियोग। **ममव्यथा** – हृदय को कष्ट देने वाली पीड़ा। **परिच्छेद** – अध्याय। **विधात्री** – जन्म देने वाली। **माचिया** – खाट की तरह बुनी हुई छोटी चौकी (बैठकी) । **विराजमान** – बैठना। **युरखिन** – बड़ी-बूढ़ी। **अभिषिक्त** – जिसका अभिषेक हुआ हो, अधिका-प्राप्त। **काकभुशडी** – राम का एक भक्त जो शापवश एक कौआ बना। **सृष्टि** – रचना, संसार। **लीक छोड़ना** – परंपरा को तोड़ना। **राब** – खाँड़, गाढ़ा सीरा। **औटना** – ताप से गाढ़ा करना। **टकसाल** – वह स्थान जहाँ सिक्के ढाले जाते हैं। **चुगली-चबाड़** – निंदा। **परिणति** – निष्कर्ष।

अलगढ़ा – बँटवारा। **खलिहान** – कटी फसल को रखने का स्थान। **निरंतर** – लगातार। **कुकुरी** – कुतिया। **बिलारी** – बिल्ली। **होरहा** – होला, आग पर भुना हरे चने का रूप। **आजिया ससुर** – पति का बाबा। **कै** – कितने ही। **उपार्जित** – कमाई। **कटिबद्ध** – तैयार। **जिठत** – पति के बड़े भाई का पुत्र। **गठबंधन** – विवाह, शादी।

परिमाजन – शुद्ध करना, सुधार करना। **कर्मठता** – मेहनत। **दीक्षित** – जिसने दीक्षा ग्रहण किया हो। **अथ** – प्रारंभ। **अभिनदन** – स्वागत।

नितांत – पूर्णतः। **वीतराग** – आसक्तिरहित। **आसीन** – बैठा। **निर्दिष्ट** – निश्चित। पितिया **ससुर** – पति का चाचा। **मौखिक** – जबानी। **निवारण** – दूर करना। **उपचार** – इलाज। **जाग्रत** – सचेत।

मकड़ – मक्का। **लयसी-पतला** – सा हलुवा। **क्रियात्मक** – व्यावहारिक। **पोयला** – दाँतरहित मुँह। **दत-कथाएँ** – परंपरा से चले आ रहे किस्से। **कंठस्थ** – याद। **नरो वा कुंजरो वा** – मनुष्य या हाथी। **सिर घुटाना** – जड़ से

बाल कटवाना। **अंकुरित भाव** – बिना संकोच के। **चूड़ाकम** – सिर के बाल को पहले-पहल कटवाना। **नायित** – नाई। **निष्यन्न** – पूर्ण।**अपमान** – निरादर। **मंथरता** – धीमी गति। **पटु** – चतुर। पिंड **छुड़ाया** – छुटकारा पाया।

अतिशयोक्तियाँ – बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बातें। **अमरबेल** – जड़रहित बेल जो दूसरे वृक्षों से जीवनरस लेकर फैलती है। **आभा** – प्रकाश। **उदभासित** – आलोकित। **पागुर** –जुगाली। **निस्तब्धता** – शांति। **प्रशांत** – पूरी तरह शांत।

आतांकित – भयभीत। **नाती** – बेटी का पुत्र। **विनीत** – विनम्र। **मचान** – बाँस आदि की सहायता से बनाया गया ऊँचा आसन।

स्नेह – प्रेम। **सम्मान** – आदर। **अपभ्रंश** – बिगड़ा हुआ। **कारागार** – जेल।

माड़ – माँ। **बड़े लाट** – वायसराय। **विषम** – विपरीत। **दुलभ** – कठिन।

पाठ का उद्देश्य

भक्तिन पात्र का मानसिक द्वन्द, अंतर्द्वंद व पीड़ा का लेखिका महादेवी वर्मा जी ने प्रस्तुत किया है। भक्तिन संस्मरण में लेखिका ने एक ऐसी देहाती वृद्धा का चित्रण किया है, जिसके अतीत व व्रतमान का चित्रण किया है। लेखिका ने भक्तिन की तुलना हनुमान जी से की है। भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था।पाँच वर्ष की आयु में विवाह ९ वर्ष की आयु में गौना हो गया।पिता ने मृत्यु का समाचार विमाता व सास ने नहीं पहुँचने दिया। बड़ी बेटी के विवाह के उपरान्त पति भी स्वर्ग सिधार गए। किसी प्रकार दो बेटियों के हाथ पीले किये ,लेकिन दैव कृपा से घर - जमाई बड़ा दामाद भी स्वर्ग सिधार्म गया।पारिवारिक द्वेष में जीवन झुलस गया।गाय भैस ,खेत ,खलिहान सब खतम हो गए। भक्तिन जैसी साहसी महिला जीवन में संघर्ष ही करती रहती है।वह हिम्मत नहीं हारती। वह अंत में लेखिका की सेवा में उपस्थित हुई। वह हनुमान जी की तरह लेखिका की सेवा करती रहती है। वह हिम्मत नहीं हारती।पढ़ी लिखी न होने पर भी वह लेखिका की सहायता करती थी।लेखिका पर स्वयं भक्तिन का इतना प्रभाव पड़ा कि वह स्वयं देहातिन हो गयी। वह बेटी - दामाद के बुलावा आने पर भी लेखिका का साथ छोड़ कर जाने को तैयार न हुई।
इस प्रकार हम देखते हैं कि भक्तिन के रूप में आदर्श सेविका का रूप प्रस्तुत किया गया है। वह अपने चरित्र व स्वभाव से सभी को अपना बना लेती है।

शीर्षक की सार्थकता

भक्तिन शीर्षक बहुत ही सरल व संक्षिप्त है। पाठ का शीर्षक पढ़ते ही पाठकों के मन में यह विचार उठता है कि वह भक्तिन कौन है ? क्या कोई वैरागी औरत है। लेखिका ने स्वयं कहा कि भक्तिन के वेश भूषा में गृहस्थ व सन्यासी का समिश्र है। वह एक ग्वाला की कन्या थी। भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था।पाँच वर्ष की आयु में विवाह ९ वर्ष की आयु में गौना हो गया।पिता ने मृत्यु का समाचार विमाता व सास ने नहीं पहुँचने दिया। बड़ी बेटी के विवाह के उपरान्त पति भी स्वर्ग सिधार गए। किसी प्रकार दो बेटियों के हाथ पीले किये ,लेकिन दैव कृपा से घर - जमाई बड़ा दामाद भी स्वर्ग सिधार्म गया।पारिवारिक द्वेष में जीवन झुलस गया। गाय भैस ,खेत ,खलिहान सब खतम हो गए। भक्तिन जैसी साहसी महिला जीवन में संघर्ष ही करती रहती है।वह हिम्मत नहीं हारती। वह अंत में लेखिका की सेवा में उपस्थित हुई। वह हनुमान जी की तरह लेखिका की सेवा करती रहती है। वह हिम्मत नहीं हारती।पढ़ी लिखी न होने पर भी वह लेखिका की सहायता करती थी।लेखिका पर स्वयं भक्तिन का इतना प्रभाव पड़ा कि वह स्वयं देहातिन हो गयी। वह बेटी - दामाद के बुलावा आने पर भी लेखिका का साथ छोड़ कर जाने को तैयार न हुई। उसमें स्वामिभक्ति के सभी गुण है। वह लेखिका की सेवा करना व उन्हें खुश रखना अपने जीवन का परम धर्म समझती है। अतः लेखिका ने भक्तिन के रूप में एक आदर्श सेविका का चित्रण किया है।

कहानी के प्रारम्भ से लेकर अंत तक भक्तिन के ही इर्द -गिर्द घूमती है। भक्तिन के जीवन के संघर्षमय पक्ष का चित्रण करना लेखिका का उद्देश्य रहा है। अतः भक्तिन शीर्षक सार्थक व सफल है।

प्रश्न

निम्नलिखित गदयांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

प्रश्न 1:

सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पद्र्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है-नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्ध भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धसूचक नाम किसी को बताती नहीं।

प्रश्न:

1. **भक्तिन के सदर्भ में हनुमान जी का उल्लख क्यों हुआ हैं?**
2. **भक्तिन के नाम और उसके जीवन में क्या विरोधाभास था?**
3. **‘जीवन में प्राय: सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता हैं”-अपने आस-पास के जगत से उदाहरण देकर प्रस्तुत कथन की पुष्टि कीजिए।**
4. **भक्तिन ने लेखिका से क्या प्राथना की ?क्यों ?**

प्रश्न २:

भक्तिन का चरित्र-चित्रण कीजिए।